चूहों का आचार

नज़ीर अकबराबादी

फिर गर्म हुआ आन के बाज़ार चूहों का।
हमने भी किया खोमचा तय्यार चूहों का।
सर पाँव कुचल कूट के दो चार चूहों का।
जल्दी से कचूमर-सा किया मार चूहों का।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का

आगे थे कई अब तो हमीं एक हैं चूहे मार।
मुद्दत से हमारा है इस आचार का व्यौपार।।
गलियों में हमें ढूँढते फिरते हैं खरीदार।
बरसे हैं पड़ी कौड़ी, रूपे पैसों की बौछार।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का

सूखे जिसे तरकारी से तलने के हों दरकार।
तो सूखे भी खूँटी पे लटकते हैं कई हार।।
कुछ तेल के कुछ पानी के कुछ चटनी है तय्यार।
किस तरह की लज़्ज़त है तू चख देख मेरे यार।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का

दीमक की मिर्च लाल सड़ी लीकों की राई।
दुम टाँग नली खोपरी नस-नस है सड़ाई।।
और जिस पे सड़ी मोरी की कीचड़ है मिलाई।
जब ऐसी बनी ज़ोर मज़ेदार खटाई।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का

कुछ केंचुए कुछ बिच्छू हैं, कुछ नाग हैं काले।
भूने हुए च्यूंटे भी कई सेर हैं डाले।।
कुछ टुकड़ियाँ कुछ मक्खियाँ कुछ मकड़ी के जाले।
और उनके सिवा कितने मसाले हैं जो डाले।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का

कुछ इसमें अकेले न चूहे सेर पड़े हैं।
घूँस और छछून्दर के कई ढेर पड़े हैं।।
जूँ पिस्सू मच्छर और कई सेर पड़े हैं।
और खाट के खटमल भी सवा सेर पड़े हैं।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का

अव्वल तो चूहे छाँटे हुए कद के बड़े हैं।
और सेर सवा सेर के मेंढक भी पड़े हैं।।
चख देख मेरे यार यह अब कैसे कड़े हैं।
चालीस बरस गुज़रे हैं जब ऐसे सड़े हैं।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का

चिमगादड़, अबाबील की टाँटे भी पड़ी हैं।
उल्लू के पर और गिद्ध की बीटें भी पड़ी हैं।।
गोबर की डली बीट की खातें भी पड़ी हैं।
सर कौवों के और चील की आँतें भी पड़ी हैं।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का

चूहों का जुदा चूहों की मूँछों का जुदा है।
दुम का वह जुदा कान का आँखों का जुदा है।।
लोटे में सड़ी खाल का बालों का जुदा है।
प्याली में निरी सूत-सी आँतों का जुदा है।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का

खावे जो इस आचार की एक मूँछ की झुण्डी।
खुल जावे सब उसके वह दिलो जान की घुण्डी।।
आती है चली मुल्कों से हुण्डी पे जो हुण्डी।
जो सर है, चूहे का सो मज़े में है वह मुण्डी।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का

गर पाँच रूपे होवें तो एक छिपकली ले लो।
और एक अशरफी का छछून्दर सड़ी ले लो।।
मत घूँस के तईं देख के तरसाओ जी ले लो।
ले लो अजी ले लो, अजी ले लो अजी ले लो।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का

जब दाँत तले खोपरी भरती है चराके।
खुल जाते हैं लज़्ज़त के दिलों बीच भभाके।।
चखते ही जुबां भरती है इस ढब के तड़ाके।
शबरात में जिस तरह से छुटते हैं पटाके।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का

लाता है कोई चिकने घड़े और कोई कोरे।
प्याला कोई थाली कोई पीतल के कटोरे।।
क्या लेंगे अब उसको कि जो मफ्लिस हैं छछोरे
खावेंगे वही जोकि हैं दौलत के चटोरे।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का

पाचन के ऊपर अब तो यह चूरन का चचा है।
जो खावे तो फिर पेट का पत्थर भी पचा है।।
तुरशी में खटाई में यह अब ऐसा रचा है।
जो आम का बाबा है तो लीमू का चचा है।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का

आगे जो बनाया तो बिका तीस रुपे सेर।
और गहकी गए ले इसे पचीस रुपे सेर।।
जाड़ों में यह बिकता रहा बत्तीस रुपे सेर।
और होलियों में बिकता है चालीस रुपे सेर।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का

रोज़ी तो हमारी यह उतारी है खुदा ने।
दिन रात पड़े हमको यह आचार बनाने।।
और पेट के भी वास्ते दो पैसे कमाने।
लज़्ज़त को "नज़ीर" इसकी जो खावे वही जाने।।
क्या ज़ोर मज़ेदार है आचार चूहों का

दुकानवाले ने मियाँ के लिए आचार भेजा। उसमें से निकली मरी हुई चुहिया। बस यही बात इस नज़्म को लिखने का कारण बनी।